धन का अभिमान

एक बार 'सुथरा जी' ईश्वर के नाम का प्रचार करते हुए करनाल पहुँचे। वहाँ जाकर उन्हें पता चला कि करनाल के सेठ हीरालाल ने अपने बेटे की शादी बड़ी धूमधाम से की है। हीरालाल का भाई कर्मचन्द सत्गुरु के दरबार का बड़ा श्रद्धालु सिख था।

वह नाम के सिमरन में लीन रहता था । कर्मचन्द का जीवन भी बड़ा साधारण था इसीलिए हीरालाल ने इसे अपने बेटे की शादी पर नहीं बुलाया था। जब सुथरे शाह जी करनाल पहुँचे तो उन्हें इस विवाह का पता चला। वह सीधे हीरालाल के घर गए। मुनीम से कहा कि वे सेठ हीरालाल से मिलना चाहते हैं।

सेठ हीरालाल ने समझा कि शायद कोई फकीर आशीर्वाद देने और बधाई देकर कुछ माँगने आया है, इसलिए उसने मुनीम द्वारा कहलवा दिया कि सेठ जी इस समय खाली नहीं है फिर आना, शादी की थकावट के कारण कुछ अस्वस्थ भी हैं। सुथरा जी ने कहा- अगर वो अस्वस्थ हैं तो हम उन्हें ठीक कर देते हैं। उन्होंनें बड़ी अवज्ञा की है और अहंकार में इतने मस्त हो गए हैं कि अपने भाई को भी भूल गए। उन्हें यह पता नहीं कि भाई बिना शोभा नहीं होती ।

मुनीम जी ने यह शब्द सेठ जी को बताए कि वह फकीर ऐसे बोल रहा है। सेठ ने समझा कि शायद उसके भाई ने इनको भेजा है। इसलिए सेठ ने कहला भेजा कि कर्मचन्द को तो फकीर और मंगते ही अच्छे लगते हैं, इसलिए हमारे साथ उसकी नहीं बनती ।

मुनीम से यह वचन सुनकर 'सुथरा' जबरदस्ती सेठ के कमरे में घुस गया और आँखे बन्द कर लीं। सेठ ने कहा, महाराज! बोलो क्या चाहते हो?

हमने शादी पर पहले ही बहुत खर्च कर दिया है अगर फिर कभी आते तो आपकी सेवा भी कर देते।

सुथरे शाह जी हँस पड़े और बोले, शाह जी ! हम मंगते नहीं, सच्चे पातशाह के दरबारी हैं और धर्मराज की जगह पाखण्डियों को दण्ड देकर सीधी राह दिखाते हैं। आप समझते हैं कि आप बड़े अमीर हैं और बेटे की शादी में हजारों रुपये खर्च किए हैं और वाह-वाह करवा ली है। पर याद रखना, सच्चे पातशाह के दरबार की तरफ से आप निश्चिंत (बेखबर) नहीं हो सकते। क्या हुआ अगर –

घर दी धाड़ वधाई के नाऊं रखाइयो जन्ज,
ज्यों-ज्यों झुग्गा उजड़े, त्यों -त्यों कहिए धन्न
आई रन ते होए कन, लोकां आखिया अडिया घर।
होईया बनी सदा कर ज्यों ज्यों लगन कुटुंब दियां लीकां
दे दे रैसो उचियाँ डीका।
ढोल वजे कर लुटिए लोक जाने व्याह।
साहिब अर्थ न बीजियो होयो मुख स्याह।
जिस वेले लेखा मंगिए गल पलू मुँह घाह।
राहों घुथे सुथरेया तिना नूँ वडा दाह,
धीयाँ धाड़ ते पुत्र फाह रन दुखों दा खूह,
इस घानी 'चों' सुथरेया कोई हरजन कडे धुह।

सेठ जी कभी वो समय भी याद किया जब –
ओथे त्रिमत रही खडोतिया, पुत्र ते भाई।
हसती, घोड़े, माल धन, कुछ नाल न जाई।
तदहो सिमरया देवी देवता कौन होय सहाई।
जिस पहला मूल न चेतयो, हुन बने न पाई।
ओ देखो जी! मनसुख मारियन बहु ले सजाई।

सुथरे जी के यह वचन सुनकर सेठ जी को कुछ समझ आई । सुथरा जी ने कहा- 'सेठ जी, कुछ भाई का भी ख्याल करो? कुछ आगे पीछे का भी ख्याल है? कुछ धर्म का भी ख्याल है? हम मँगते नहीं, सोये हुए को जगाने वाले हैं। यह याद रखना, दीया जलाया है, कहीं बुझ न जाए।'

सेठ जी सुथरे शाह जी के वचन सुनकर घबरा गए, हाथ जोड़कर विनती की, जो हुक्म करो, उसी तरह किया जाए, अन्दर से एक सौ एक रुपया लाकर सुथरे शाह जी के आगे रखा। सुथरे शाह जी ने कहा, हमें एक ही दमड़ा (रुपया) लेने का हुक्म है। बाकी आप लंगर लगवा देना। अपने भाई की सेवा करो। बाँट कर खाओ। गुरु नानक बरकत देगा। यह कहकर एक दमड़ा लेकर 'सुथरे शाह जी' चले गए। उनके जाने के बाद सेठ बीमार पड़ गया। उसको सुथरे शाह जी के वचन याद आते। इस डर से उसने मुसाफिरों के लिए लंगर लगा दिए। धीरे-धीरे रोग दूर हुआ। इक्कीसवें दिन जाकर सेठ जी को आराम आया।